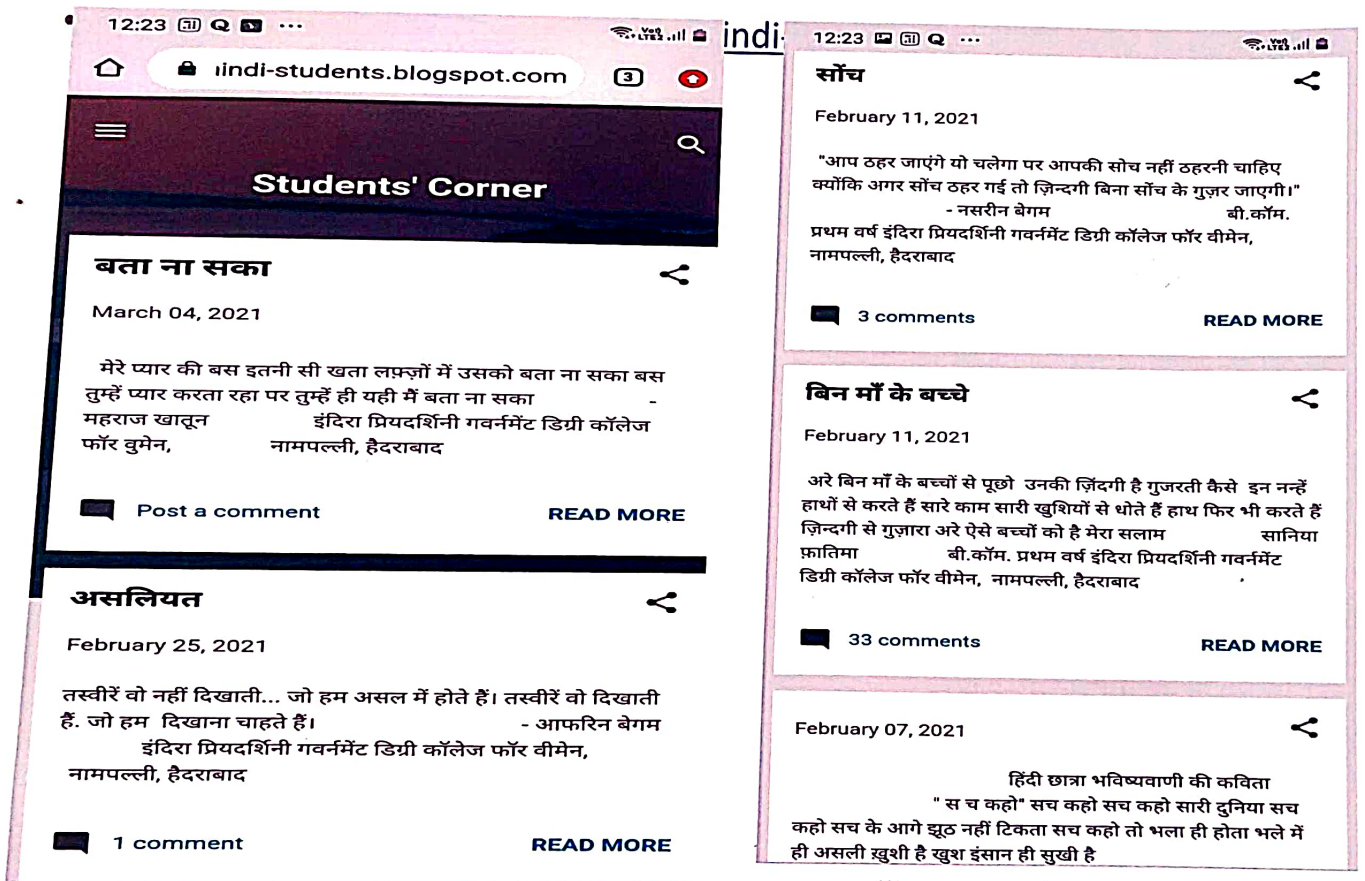


## INNOVATION AND CREATIVITY- BLOG for STUDENTS

- Publishing of articles written by students in a blog exclusively meant for Hindi



# BLOG for LESSONS and TEACHING MATERIAL

Blog :- [www.harbans-hindi.blogspot.com](http://www.harbans-hindi.blogspot.com)

10:52

harbans-hindi.blogspot.com

10

चित्रण इस युग के काव्य की प्रमुख विशेषता रही।  
**4. प्रकृति चित्रण :-** इस युग के काव्य में प्रकृति के उद्दीपन रूप का विशेष रूप से चित्रण किया गया है। प्रकृति का चित्रण श्रृंगार के सहायक सामग्री के रूप में किया गया है।  
**5. अलंकारों का विशेष प्रयोग :-** रीतिकाल के सभी कवियों ने अपनी रचनाओं में अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है। बहुत से रीति कवियों ने अलंकारों के लक्षण एवं उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त काव्यों में भी अलंकारों का सौंदर्य देखते ही बनता है।  
**6. सौंदर्य वर्णन :-** रीतिकालीन काव्य में सौंदर्य को काव्य के एक अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार किया गया है। विशेष कर नारी सौंदर्य को महत्व दिया गया और नारी के सौंदर्य का अद्भुत वर्णन किया गया है। सौंदर्य चित्रण की दृष्टि से रीतिकाल निश्चित रूप से अद्वितीय माना गया है।  
**7. रीतिमुक्त काव्य :-** इस युग में ऐसे कवि भी हुए हैं, जिन्होंने लोक से हट कर काव्य-रचना की। इन कवियों में प्रेम की पीर के गायक घनानंद, वीर रस के कवि भूषण एवं नीति-संबंधी कुण्डलियों लिखने वाले गिरिधर कविराय आदि कवि प्रमुख हैं। कुछ कवियों ने धार्मिक रचनाएँ भी लिखीं।  
**8. मुक्तक काव्य की प्रधानता :-** रीतिकाल में अधिकांश कवियों ने मुक्तक शैली में ही काव्य-रचना की। कुछ कवियों ने प्रबंध काव्य की रचना की पर मुख्य रूप से मुक्तक शैली की ओर ही कवियों का झुकाव रहा।  
**9. भाषा-शैली :-** रीतिकालीन साहित्य मुख्य रूप से ब्रज भाषा में लिखा गया। इस युग के काव्य-भाषा में चित्रात्मकता और लयात्मकता का अनूठा निर्वाह मिलता है। इस युग के कवियों ने दोहा, सवैया तथा कवित्त छंद का अधिक प्रयोग किया है। इस तरह रीतिकाल श्रृंगार-चित्रण एवं कला पक्ष की उत्कृष्टता की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है। सौंदर्य वर्णन की दृष्टि से इस काव्य को बेजोड़ कहा जा सकता है।

Posted 3rd April 2020 by Harbans Kour, Asst. Professor of Hindi

Tweet

Like 1

21

View comments

III

O

<